श्रीरामोजयति

श्रीरामचरितमानस

में

श्रीरामजी के नाम की शब्दावली

प्रकाशक

जयरामदास 'दीन'

प्रचारक

परम्हंस श्रीस्वामी अवधबिहारी दासजी

त्रिवेणी बाँधगुफ़ा

पो० दारागंज, प्रयाग

श्रीरामोजयति

श्रीरामचरितमानस

में

श्रीरामजी के नाम की पादावली

प्रकाशक

जयरामदास 'दीन'

प्रचारक

परम्हंस श्रीस्वामी अवधबिहारी दासजी

त्रिवेणी बाँधगुफ़ा

पो० दारागंज, प्रयाग

* श्रीराम पञ्चायतन *

❀ श्रीरामोविजयते ❀

श्रीरामचरितमानस

बाल काण्डम्

राम भगति जहँ सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा॥
राम भगति भूषित जिय जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी॥
राम चरित सर बिनु अन्हवाए। सोश्रम जाहि न कोटि उपाए॥
राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस अस मोहिं अँदेसा॥
रामचरन पंकज मन जासू। लुब्ध मधुप इव तजै न पासू॥

दो०–राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरउ, जौं चाहसि उजियार॥२७॥

राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा॥
राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किय साधु सुखारी॥
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥
राम सुकंठ विभीषण दोऊ। राखे शरण जान सब कोऊ॥
राम भालु कपि कटक बटोरा। सेतुहेतु श्रम कीन्ह न थोरा॥
राम सकुल रन रावन मारा। सीय सहित निज पुर पगुधारा॥
रामनाम कलि अभिमतदाता। हित परलोक लोक पितु माता॥

दो०–राम नाम नर केशरी, कनक कशिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमि, पालिहि दलि सुरसाल॥३३॥

राम सुस्वामि कुसेवक मोसो । निज दिसि देखि दयानिधि पोसो ॥

दो०—राम निकाई रावरी, है सबही को नीक ।
जो यह साँची है सदा, तौ नीको तुलसीक ॥३७॥

राम कथा कलि पन्नग भरनी । पुनि विवेक पावक कहँ अरनी ॥
राम कथा कलि कामद गाई । सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसिदास हित हिय हुलसी सी ॥

दो०—राम कथा मन्दाकिनी, चित्रकूट चितचारु ।
तुलसी सुभग सनेह वन, सिय रघुवीर बिहारु ॥४१॥

राम चरित चिन्तामनि चारू । सन्त सुमति तिय सुभग सिंगारू ॥

दो०—राम चरित राकेश कर, सरिस सुखद सब काहु ।
सज्जनकुमुद चकोर चित, हित विशेष बड़ लाहु ॥४ ॥

राम कथा कै मिति जग नाहीं । असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥

दो०—राम अनन्त अनन्त गुन, अमित कथा विस्तार ।
सुन आचरजु न मानिहहिं, जिन्ह के बिमल विचार ॥४४

राम धामदा पुरी सुहावनि । लोक समस्त विदित जग पावनि ॥
राम चरित मानस एहि नामा । सुनत श्रवण पाइय विश्रामा ॥
राम चरित मानस मुनि भावन । विरचेउ शंभु सुहावन पावन ॥
राम सीय यश सलिल सुधासम । उपमा वीचि विलास मनोरम ॥
राम भगति सुरसरि तहि जाई । मिलि सुकीरति सरयु सुहाई ॥
राम तिलक हित मंगल साजा । परब योग जनु जुरेउ समाजा ॥
राम राज सुख विनय बड़ाई । विसद सुखद सोइ सरद सुहाई ॥

राम सुप्रेमहि पोषत पानी । हरत सकल कलि कलुष गलानी ॥
राम नाम कर अमित प्रभावा । संत पुरान उपनिषद गावा ॥
राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं । कहिय बुझाइ कृपानिधि मोहीं ॥
राम भगत तुम्ह मन क्रम बानी । चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥
राम कथा शशि किरन समाना । सन्त चकोर करहिं जेहिं पाना ॥
राम कथा मुनिवर्य्य बखानी । सुनी महेश परम सुख मानी ॥

दो०—राम बचन मृदु गूढ़ सुनि, उपजा अति सङ्कोच ।
सती सभीत महेश पहि, चली हृदय बड़ सोच ॥६४॥

राम नाम शिव सुमिरन लागे । जानेउ सती जगत पति जागे ॥
राम चरित अति अमित मुनीसा । कहि न सकहिं सत कोटि अहीसा ॥
राम सो अवध नृपति सुत सोई । की अज अगुन अलख गति कोई ॥

दो०—राम कृपा ते पारवति, सपनेहु तव मनमाहि ।
शोक मोह सन्देह भ्रम, मम विचार कछु नाहि ॥१२१॥
राम कथा सुरधेनु सम, सेवत सब सुख दानि ।
सत समाज सुरलोक सम, कोन सुनै असजानि ॥१२२॥

राम कथा सुन्दर करतारी । संशय बिहँग उड़ावनि हारी ॥
रामकथा कलि बिटप कुठारी । सादर सुनु गिरिराज कुमारी ॥
राम नाम गुन चरित सुहाए । जनम करम अगनित श्रुति गाए ॥
राम सच्चिदानन्द दिनेशा । नहिं तहँ मोह निशा लवलेशा ॥
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना । परमानन्द परेश पुराना ॥
राम सो परमातमा भवानी । तहँ अति भ्रम अविहित तव बानी ॥
राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी । सर्व रहित सब उर पुरवासी ॥

राम अतर्क बुद्धि मन बानी । मति हमार अस सुनहि सयानी ॥
राम जनम के हेतु अनेका । परम विचित्र एक ते एका ॥
राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई । करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥
रामचन्द्र के चरित सुहाए । कलप कोटि लगि जाहिं न गाए ॥

दो०—राम लषन दोउ बन्धु वर, रूप शील गुन धाम ।
मख राखे सबु साखि जगु, जीति असुर संग्राम ॥२२१॥

राम अनुज मन की गति जानी । भगत वछलता हिय हुलसानी ॥
राम देखावहिं अनुजहिं रचना । कहि मृदु मधुर मनोहर वचना ॥
राम कहा सब कौशिक पाहीं । सरल सुभाव छुआछल नाहीं ॥
रामहिं चितव भाव जेहिं सीया । सो सनेह सुख नहिं कथनीया ॥
राम रूप अरु सिय छवि देखे । नर नारिन परिहरी निमेखे ॥

दो०—रामहिं प्रेम समेत लखि, सखिन समीप बुलाइ ।
सीता मातु सनेह बस, वचन कहे बिलखाइ ॥२५८॥

राम चहहिं शंकर धनु तोरा । होहु सजुग सुनि आयसु मोरा ॥
राम बाहु बल सिन्धु अपारू । चहत पार नहिं कोउ कन्हहारू ॥

दो०—राम बिलोके लोग सब, चित्र लिखे से देषि ।
चितई सीय कृपाय तन, जानी बिकल बिशेषि ॥

राम रूप राकेश निहारी । बढ़त बीचि पुलकावलि भारी ॥
रामहिं लखनु बिलोकत कैसे । शशिहिं चकोर किशोरकु जैसे ॥
राम सुभाय चले गुरु पाहीं । सिय सनेहु बरनत मन माहीं ॥
राम लखन दशरथ के ढोटा । देखि अशीश दीन्ह भल जोटा ॥
रामहिं चितय रहे थकि लोचन । रूप अपार मार मद मोचन ॥

राम वचन सुनि कछुक जुड़ाने। कहि कछु लखनु बहुरि मुसुकाने ॥
राम कहेउ रिस तजहु मुनीशा। कर कुठार आगे यह शीशा ॥
राम मात्र लघु नाम हमारा। परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा ॥
राम कहा मुनि कहहु विचारी। रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥
राम रमापति कर धनु लेहू। खैचहु मिटै मोर सन्देहू ॥
राम लषन उर कर वर चीठी। रहि गये कहत न खाटी मीठी ॥
राम लषन कै कीरति करनी। बारहिं बार भूप वर वरनी ॥
राम सरिस वर दुलहिनि सीता। समधी दशरथ जनक पुनीता ॥
रामहिं देखि वरात जुड़ानी। प्रीति कि रीति न जाति बखानी ॥

दो०–राम रूप नख शिख सुभग, बारहिं बार निहारि।
पुलक गात लोचन सजल, उमा समेत पुरारि ॥३४१॥

रामहिं चितव सुरेस सुजाना। गौतम शाप परम हित माना ॥

दो०–रामचन्द्र मुखचन्द्र छवि, लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर ॥३२०॥

राम सीय सुन्दर परिछाहीं। जग मगाति मनि खंभन्हि माहीं ॥
राम सीय शिर सेंदुर देहीं। सोभा कहि न जात विधि केहीं ॥
राम विदा मांगा कर जोरी। कीन्ह प्रनाम बहोरि बहोरी ॥
राम करौं केहि भाँति प्रशंसा। मुनि महेश मन मानस हंसा ॥
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी। पाइ नयन फल होहिं सुखारी ॥
राम दरश हित अति अनुरागीं। परिछन साजु सजन सब लागीं ॥
रामहिं देखि रजायसु पाई। निज निज भवन चले शिरनाई ॥

दो०–राम प्रतोषी मातु सब, कहि विनीत वर बैन।
सुमिर शम्भु गुरु विप्र पद, किए नींद वस सैन ॥३५॥

राम सप्रेम संग सब भाई। आयसु पाइ फिरे पहुँचाई॥
दो०—राम रूप भूपति भगति, ब्याह उछाह अनन्द।
जात सराहत मनहि मन, मुदित गाधि कुल चन्द॥३५॥

इति बाल काण्ड उत्तरार्द्ध समाप्त
७५ चौपाई + १६ दोहा = ६१

अवध काण्डम्

राम रूप गुन शील सुभाऊ। प्रमुदित होहिं देखि सुनि राऊ॥
राम सीय तनु सगुन जनाए। फरकहिं मंगल अंग सुहाए॥
रामहिं बंधु सोच दिन राती। अंडन्हि कमठ हृदय जेहि भाँती॥
दो०—राम काज अविषेक सुनि, हिय हरषे नर नारि।
लगे सुमङ्गल सजन सब, बिधि अनुकूल विचारि॥ ८॥
राम करहु सब संयम आजू। जौं बिधि कुशल निवाहइ काजू॥
रामहिं छाँड़ि कुशल केहि आजू। जिन्हहिं जनेश देइ जुवराजू॥
राम तिलक जौं साँचेहु काली। देहुँ माँगु मन भावत आली॥
रामहिं तिलक कालि जौं भयऊ। तुम कहुँ बिपति बीज बिधि बयऊ॥
रामहिं देउँ कालि जुवराजू। सजहिं सुलोचनि मङ्गल साजू॥
राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ। राम मातु कछु कहेउ न काऊ॥
राम साधु तुम्ह साधु सयाने। राम मातु भलि सब पहिचाने॥
राम राम रटि विकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बिहालू॥
राम सुमन्त्रहिं आवत देखा। आदर कीन्ह पिता सम लेखा॥
राम कुभाँति सचिव सँग जाहीं। देखि लोग जहँ तहँ विलखाहीं॥
राम सत्य सब जो कछु कहहू। तुम्ह पितुमातु वचन रत अहहू॥

रामहिं मातु वचन सब भाए। जिमि सुरसरि गति सलिल सुहाए॥
रामहिं चितइ रहेउ नर नाहू। चला विलोचन वारि प्रवाहू॥
राम सरिस सुत कानन जोगू। काह कहिहि सुनि तुम्ह कहँ लोगू॥
राम उठाइ मातु उर लाई। कहि मृदु वचन वहुरि समुझाई॥
राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना। समउ सनेह न जाइ बखाना॥
राम विलोकि बन्धु कर जोरे। देह गेह सब सन तृन तोरे॥
राम प्रान प्रिय जीवन जीके। स्वारथ रहित सखा सवही के॥
राम तुरत मुनि भेष वनाई। चले जनक जननी शिरु नाई॥
राम चलत अति भयउ विषादू। सुनि न जाइ पुर आरत नादू॥
राम चले वन प्रान न जाहीं। केहि सुख लागि रहत तनु माहीं॥
राम बियोग विकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े॥
राम चरन पङ्कज प्रिय जिन्हहीं। बिषय भोग बश करइकितिन्हहीं॥

दो०–राम लषन सिय यान चढ़ि, शंभु चरन शिरु नाइ।
सचिव चलायउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ॥८२॥
राम दरश हित नेम व्रत, लगे करन नर नारि।
मनहु कोक कोकी कमल, दीन विहीन तमारि॥८३॥

राम लषन सिय रूप निहारी। कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी॥
रामचन्द्र पति सो वैदेही। सोवति महि बिधि बाम न केही॥
राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अविगत अलख अनादि अनूपा॥
राम प्रबोध कीन्ह वहुभाँती। तदपि होति नहिं शीतल छाती॥
राम लषन सियपद शिरु नाई। फिरउ त्रनिक जिमि मूर गवाई॥
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू। मुदित भये लहि लोचन लाहू॥

दो०–राम कीन्ह विश्राम निशि, प्रात प्रयाग नहाइ ।
चले सहित सिय लषण जन, मुदित मुनिहिं शिरुनाइ ॥१०४॥

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं । नाथ कहिय हम केहिं मग जाहीं ॥
राम सप्रेम पुलकि उर लावा । परम रङ्क जनु पारस पावा ॥
राम लषन सिय रूप निहारी । शोच सनेह विकल नर नारी ॥
राम लषन सिय रूप निहारी । पाइ नयन फल होहिं सुखारी ॥
रामहिं देखि एक अनुरागे । चितवत चले जाँहिं सँग लागे ॥
राम लषण सिय सुन्दरताई । सब चितवहिं चित मन मतिलाई ॥
राम लषन पथि कथा सुहाई । रही सकल मग कानन छाई ॥
राम लषण सिय प्रीति सुहाई । वचन अगोचर कहि किमि जाई ॥
राम धाम पथ पाइहि सोई । जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई ॥
राम दीख मुनि बास सुहावन । सुन्दर गिरि कानन जल पावन ॥

सोरठा–राम स्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धि पर ॥
अविगत अकथ अपार, नेति नेति नित निगम कह ॥५॥

राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥
राम भगति प्रिय लागहिं जेही । तेहि उर बसहु सहित वैदेही ॥
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू । मुदित देव लहि लोचन लाहू ॥
राम सनेह मगन सब जाने । कहि प्रिय बचन सकल सनमाने ॥
रामहिं केवल प्रेम पियारा । जानि लेउ जो जाननि हारा ॥
राम सकल वनचर तब तोषे । कहि मृदु वचन प्रेम परिपोषे ॥
राम संग सिय रहति सुखारी । पुर परिजन गृह सुरति बिसारी ॥

दोहा–राम लषन सीता सहित, सोहत परन निकेत ॥
जिमि वासव बस अमर पुर, शची जयंत समेत ॥१३६॥

राम राम सिय लषन पुकारी । परेउ धरनि तल व्याकुल भारी ॥
राम रहित रथ देखहि जोई । सकुचिहि मोहिं विलोकत सोई ॥
राम जननि जब आइहि धाई । सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई ॥
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लषन वैदेही ॥
राम कुशल कहु सखा सनेही । कहँ रघुनाथ लषन वैदेही ॥
राम रूप गुन शील सुभाऊ । सुमिरि सुमिरि उर शोचत राऊ ॥
राम सखा तब नाव मँगाई । प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥

दोहा—राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ॥
तनु परिहरि रघुवर विरह, राउ गयउ सुरधाम ॥१४९॥

राम विरोधी हृदय ते, प्रगट कोन्ह विधि मोहि ॥
मो समान को पातकी, बादि कहौं कछु तोहि ॥१५६॥

राम लषन सिय वनहिं सिधाये । गयउँ न संग न प्राण पठाये ॥
राम प्रान ते प्रान तुम्हारे । तुम्ह रघुपतिहिं प्रान ते प्यारे ॥
राम पुनीत विषय रस रूखे । लोलुप भूप भोग के भूखे ॥

दोहा—राम मातु शुठि सरल चित, मोपर प्रेम विशेषि ॥
कहत सुभाय सनेह वश, मोरि दीनता देखि ॥१७४॥

राम दरश वश सब नरनारी । जनु करि करिनि चले तकि बारी ॥
राम प्रताप नाथ बल तोरे । करहिं कटक विनु भट बिनु घोरे ॥
रामहिं भरत मनावन जाहीं । सगुन कहइ अस विग्रह नाहीं ॥
राम सखा सुनि स्यन्दन त्यागा । चले उतरि उमँगत अनुरागा ॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिन्हहिं न पाप पुञ्ज समुहाही ॥
राम नाम महिमा सुर कहहीं । सुनि सुनि अवध लोग सुख लहहीं ॥

राम सखहिं मिलि भरत सप्रेमा। पूछी कुशल सुमङ्गल खेमा॥
राम कीन्ह आपन जबहीं ते। भयउँ भुवन भूषन तब हीं ते॥
राम घाट कहँ कीन्ह प्रनामू। भा मन मगन मिले जनु रामू॥
राम जनमि जग कीन्ह उजागर। रूप शील सुख सब गुण सागर॥
राम सुना दुख कान न काऊ। जीवन तरु जिमि जोगवत राऊ॥
राम तुम्हहिं प्रिय तुम्ह प्रिय रामहिं। यह निरदोष दोष विधि वामहिं॥
राम पयादेहिं पाय सिधाए। हम कहँ रथ गज बाजि बनाए॥
राम गवन बन अनरथ मूला। जो सुनि सकल विश्वभइ शूला॥
राम भगति अब अमिय अघाहू। कीन्हेहु सुलभ सुधा वसुधाहू॥
राम बिरह तनु तजि छन भंगू। भूप सोच कर कवन प्रसंगू॥
राम लखन सिय विनु पग पनहीं। करि मुनि वेष फिरहिं वनबनहीं॥

दोहा–राम बिरह व्याकुल भरत, सानुज सहित समाज॥
पहुनाई करि हरहु श्रम, कहा मुदित मुनिराज॥२०

राम सखा कर दीन्हें लागू। चलत देह धरि जनु अनुरागू॥
राम बास थल बिटप बिलोके। उर अनुराग रहत नहिं रोके॥

दो०—राम सकोची प्रेम वश, भरत सप्रेम पयोधि॥
बनी बात बिगरन चहति, करिय जतन छल सोधि॥२०१॥

राम सदा सेवक रुचि राखी। वेद पुरान साधु सुर साखी॥

दो०—राम भगत परहित निरत, पर दुख दुखी दयाल॥
भगत शिरोमनि भरत ते, जनि डरपहु सुरपाल॥२११॥

राम सखा तेहि समय दिखावा। शैल शिरोमनि सहज सुहावा॥
राम निरादर कर फल पाई। सोवहु समर सेज दोउ भाई॥

राम लषन सिय सुनि मम नाऊँ। उठि जनि अनत जाहिंतजिठाऊँ ॥
राम वास वन संपति आजा। सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥

दो०—राम शैल शोभा निरखि, भरत हृदय अति प्रेम ॥
तापस तप फल पाइ जिमि, सुखो सिराने नेम ॥२२७॥

राम सखा ऋषि वरवस भेंटे। जनु महि लुटत सनेह समेटे ॥
राम वचन सुनि सभय समाजू। जनु जलनिधि महँ विकल जहाजू ॥
राम शैल वन देखन जाहीं। जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं ॥
राम कृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजा चहिय जस राजा ॥
राम दरश लालसा उछाहू। पथ श्रम लेश कलेश न काहू ॥
राम सनेह परस मन जासू। साधु सभा वड़ आदर तासू ॥
राम सपथ मैं कीन्ह न काऊ। सो करि कहौं सखी सति भाऊ ॥
राम जाइ वन करि सुरकाजू। अचल अवध पुर करिहहिं राजू ॥
राम भरत गुन गनत सप्रीती। निशि दम्पतिहिं पलक सम बीती ॥
राम वचन गुरु नृपहिं सुनाए। शील सनेह सुभाय सुभाए ॥
रामहिं राय कहेउ वन जाना। कीन्ह आप प्रिय प्रेम प्रमाना ॥

दो०—राम सत्य व्रत धरम रत, सब कर शील सनेहु ॥
संकट सहत सकोच वश, कहिय जो आयसु देहु ॥२८१॥

राम भगति मय भरत निहारे। सुर स्वारथी हहरि हिय हारे ॥

दो०—राम सनेह सँकोच वश, कह सशोच सुरराज ॥
रचहु प्रपंचहि पञ्च मिलि, नाहित भयो अकाज ॥२८३॥

राम सपथ सुनि मुनि जनक, सकुचे सभा ससेत ॥
सकल विलोकत भरत मुख, बनै न उत्तर देत ॥२८२॥

राम रजाय मेटि मन माहीं । देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
रामहिं चितवत चित्र लिखे से । सकुचत बोलत बचन सिखे से ॥
राम मातु दुख सुख सम जानी । कहि गुन दोष प्रबोधी रानी ॥
राम कृपा अवरेव सुधारी । बिबुध धारि भइ गुनद गुहारी ॥
दो०—राम दरश लगि लोग सब, करत नेम उपवास ॥
तजि तजि भूषण भोग सुख, जियत अवधि की आस ॥
राम मातु गुरु पद शिरु नाई । प्रभु पद पीठ रजायसु पाई ॥
दो०—राम प्रेम भाजन भरत, बड़े न यह करतूति ॥
चातक हंस सराहिअत, टेक बिबेक बिभूति ॥३१२॥
राम प्रेम विधु अचल अदोषा । सहित समाज सोह नित चोषा ॥

इति अवध काण्ड समाप्त ॥

चौपाई १०० दोहा १७ सोरठा १ =११८

बन काण्डम्

राम बदन बिलोकि मुनि ठाढ़ा । मानहुँ चित्र माँझ लिखि काढ़ा ॥
राम अनुज समेत वैदेही । निशि दिन देव जपतहहु जेही ॥
दो०—राम राम कहि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्वान ॥
करि उपाय रिपु मारे, छन महँ कृपा निधान ॥१७॥॥
राम रोष पावक अति घोरा । होइहि सलभ सकल कुल तोरा ॥
राम कहा तनु राखहु ताता । मुख मुसुकाइ कही तेहि बाता ॥
राम सकल नामनते अधिका । होउ नाथ अघ खग गन वधिका ॥
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया । मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया ॥

इति बन काण्ड समाप्त ।

चौ० ६ दो० १=७

किष्किन्धा काण्डम्

राम राम हा राम पुकारी । हमहिं देखि दीन्हेउ पट डारी ॥

दो०—राम चरण दृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनु त्याग ॥

सुमन माल जिमि कंठ ते, गिरत न जाने नाग ॥१०।

राम बालि निज धाम पठावा । नगर लोग सब व्याकुल धावा ।
राम कहा अनुजहिं समुझाई । राज देहु सुग्रीवहि जाई ॥
राम काज अरु मोर निहोरा । वानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ॥
राम काज कारन तनु त्यागी । हरिपुर गयउ परम बड़ भागी ॥
राम काज लगि तव अवतारा । सुनतहिं भयउ पर्वता कारा ॥

इति किष्किन्धा काण्ड समाप्त ॥

चौ० ६ दो० १—७

सुमेरु काण्डम्

राम काज करि फिरि मैं आवौं । सीता कै सुधि प्रभुहिं सुनावौं ॥

दोहा—राम काज सब करिहहु, तुम्ह बल बुद्धि निधान ॥

आशिष देइ गई सो, हरषि चले हनुमान ॥२॥

रामायुध अंकित गृह, शोभा वरनि न जाइ ॥

नव तुलसी के बृन्द तहँ, देखि हरषि कपिराय ॥५॥

राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा । हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥
रामचन्द्र गुन वरनै लागा । सुनतहि सीता कर दुख भागा ॥
राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुना निधान की ॥
राम बान रवि उए जानकी । तम वरूथ कहँ जातुधान की ॥

राम चरन पंकज उर धरहू । लंका अचल राज तुम्ह करहू ॥
राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु विचारि त्यागि मद मोहा ॥
राम विमुख संपति प्रभुताई । जाइ रहो पाई बिनु पाई ॥
राम कपिन्ह जब आवत देखा । किये काज मन हर्ष बिशेखा ॥
राम कृपा बल पाइ कपिन्दा । भए पक्ष जुत मनहु गिरिन्दा ॥
दोहा—राम वान अहिगन सरिस, निकर निशाचर भेक ॥
जब लगि ग्रसत न तबलगि, जतन करहु तजिटेक ॥३२॥
राम सत्य संकल्प प्रभु, सभा काल वश तोरि ॥
मैं रघुवीर शरन अब, जाउँ देहु जनि खोरि ॥४१॥
राम बचन सुनि बानर जूथा । सकल कहहिं जय कृपा वरूथा ॥
राम कृपा अतुलित बल तिन्हहीं । तृन समान त्रैलोकहि गिनहीं ॥
राम तेज बल बुधि विपुलाई । शेष सहस शत सकहिं न गाई ॥
रामानुज दीन्ही यह पाती । नाथ बचाय जुड़ावहु छाती ॥

इति सुमेरकाण्ड समाप्त ॥

चौ० १४ दो० ४=१८

युद्ध काण्डम्

राम प्रताप सुमिरि मन माहीं । करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
राम चरन पङ्कज उर धरहू । कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
राम वचन सब के मन भाए । मुनिवर निज निज आश्रम आए ॥
दोहा—रामहिं सौंपहुँ जानकी, नाइ कमल पद माथ ॥
सुत कहँ राज समर्पि वन, जाइ भजिय रघुनाथ ॥७॥
राम बिरोध कुशल जसि होई । सो सब तोहिं सुनाइहि सोई ॥

राम मनुज कस रे शठ बंगा। धन्वी काम नदी पुनि गंगा॥
राम मनुज बोलत असि बानी। गिरहि न तव रसना अभिमानी॥
राम प्रताप सुमिरि कपि कोपा। सभा माँझ प्रन करि पद रोपा॥
रामानुज लघु रेख खँचाई। सो नहिं लाँघेउ असि मनसाई
राम प्रताप प्रबल कपि जूथा। मर्दहिं निशिचर सुभट बरूथा॥
राम कृपा करि जुगल निहारे। भये विगत श्रम परम सुखारे॥
राम कृपा करि चितवा जबहीं। भये बिगत श्रम बानर तबहीं॥
राम समीप गयउ घन नादा। नाना भाँति कहेसि दुर्वादा॥
राम चरन सरसिज उर राषी। चलेउ प्रभञ्जन सुत बल भाषी॥
राम राम कहि छाड़ेसि प्राना। सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना॥
राम प्रभाव विचारि बहोरी। वन्दि चरण कपि कह कर जोरी॥

दोहा—राम रूप गुन सुमिरि मन, मगन भयो छन एक॥
रावन माँगेउ कोटि घट, मद अरु महिष अनेक॥७५॥

राम सेन निज पाछे घाली। चले सकोप महा बल शाली॥
राम कृपा कपि दल बल बाढ़ा। जिमि तृण पाइ लाग अति डाढ़ा॥

दोहा—रामानुज कहँ राम कहँ, अस कहि छाड़िस प्रान॥
धन्य शक्र जित मातु तव, कह अङ्गद हनुमान॥८९॥

दोहा—राम वचन सुनि बिहँसि कह, मोहिं सिखावत ज्ञान॥
बैर करत नहिं तब डरे, अब लागे प्रिय प्रान॥

राम कृपा करि सूत उठावा। तब प्रभु परम क्रोध कहँ पावा॥
राम बिमुख शठ चह सम्पदा। अस कहि हनेसि माँझ उर गदा॥

दो०—राम प्रचारे बीर तब, धाए कीश प्रचंड।
कपि दल प्रबल बिलोकि तेहि, कीन्ह प्रगट पाखंड॥

राम सुभाउ सुमिरि वैदेही । उपजी विरह व्यथा अति तेही ॥
राम विमुख अस हाल तुम्हारा । रहा न कुल कोउ रोवनि हारा ॥
रामाकार भये तिनके मन । गये परम पद तजि शरीर रन ॥
राम सरिस को दिन हितकारी । कीन्हें मुकुद निशाचर भारी ॥

इति युद्धकाण्ड उत्तरार्द्ध समाप्त
चौपाई २३ दोहा ५=२८

उत्तर काण्डम्

दोहा—राम विरह सागर महँ, भरत मगन मन होत ।
विप्र रूप धरि पवन सुत, आइ गए जनु पोत ॥
राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह, सत्य वचन मम तात ।
पुनि पुनि मिलत भरत सन, हरष न हृदय समात ॥
राम कहा सेवकन्ह बुलाई । प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥
दोहा—राम वाम दिश शोभित, रमा रूप गुन खानि ।
देखि सासु सब हरषीं, जनम सुफल निज जान ॥
राम विलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि शोचत हँसि मिलनी ॥
राम राज बैठे त्रैलोका । हरपित भए गए सब शोका ॥
राम भगति रत नर अरु नारी । सकल परम गति के अधिकारी ॥
दोहा—राम राज्य विहँगेश सुनु, संचराचर जग माहिं ।
कालहिं कर्म सुभाव गुन, कृत दुख काहुहि नाहिं ॥
राम राज कर सुख संपदा । वरणि न सकहिं फणीश शारदा ॥
राम करहिं भ्रातन पर प्रीती । नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥
राम कथा मुनिवर वहु वरनी । ज्ञान जोनि पावक जिमि अरनी ॥

राम सुनहु मुनि कह कर जोरी। कृपा सिन्धु बिनती कछु मोरी ॥
राम चरित शत कोटि अपारा। श्रुति शारदा न वरनै पारा ॥
राम अनन्त अनन्त गुनानी। जनम करम अनन्त न मानी ॥
राम चरित जे सुनत अघाहीं। रस विशेष जाना तिन्ह नाहीं ॥
राम चरित मानस तुम्ह गावा। सुनि मैं नाथ अमित सुख पावा ॥

दोहा—राम परायण ज्ञान रत, गुनागार मति धीर।
नाथ कहहु केहि कारन, पायउ काग शरीर ॥

राम चरित विचित्र विधि नाना। प्रेम सहित कर सादर गाना ॥
राम भगति पथ परम प्रवीना। ज्ञानी गुन गृह वहु कालीना ॥
राम कथा सो कहइ निरंतर। सादर सुनहिं विविध विहंग वर ॥
राम कृपा तव दरशन भयऊ। तव प्रसाद मम संशय गयऊ ॥
राम कृपा भाजन तुम्ह ताता। हरि गुन प्रीति मोहिं सुख दाता ॥
राम कृपा आपनि जड़ताई। कहौं खगेश सुनहु मनलाई ॥

दोहा—राम चन्द्र के भजन विनु, जो चह पद निर्वान।
ज्ञानवंत अपि सो नर, पशु विनु पूँछ विषान ॥

राम उदर देखेउँ जग नाना। देखत बनइ न जाइ बखाना ॥
राम प्रसाद भगति वर पायउँ। प्रभु पद बंदि निजाश्रम आयउँ ॥
राम कृपा विनु सुनु खगराई। जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥
राम भजन विनु मिटहि कि कामा। थल विहीन तरु कबहुँ कि जामा ॥
राम काम शत कोटि शुभग तनु। दुर्गा अमित कोटि अरि मर्दनु ॥

दोहा—राम अमित गुणसागर, थाह कि पावै कोइ।
सन्तन्ह सन जस कछु सुन, तुम्हहिं सुनायउँ सोइ ॥

राम चरित सर सुन्दर स्वामी। पायहु कहाँ कहहु नभ गामी ॥

राम विमुख लहि विधि सम देही। कवि कोविद न प्रशंसहिं तेही ॥
राम भगति यहि तन उर जामी। ताते मोहिं परम प्रिय स्वामी ॥
रामहिं भजहिं तात शिव धाता। नर पाँवर कै केतिक बाता ॥
राम चरन बारिज जब देखौं। तब निज जनम सुफल करि लेखौं ॥
राम भगति जल मम मन मीना। किमि विलगाइ मुनीश प्रवीना ॥
राम चरित सर गुप्त सुहावा। शंभु प्रसाद तात मैं पावा ॥
राम भगति जिन्ह के उर नाहीं। कबहुँ न तात कहिय तिन्ह पाहीं ॥
राम भगति अविरल उर तोरे। बसिहिं सदा प्रसाद अब मोरे ॥
राम रहस्य ललति विधि नाना। गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
राम भगति निरूपम निरुपाधी। बसै जासु उर सदा अबाधी ॥
राम भगति सोइ मुकुति गोसाँई। अन इच्छित आवै बरिआँई ॥
राम भगति चिंतामनि सुन्दर। बसै गरुड़ जाके उर अन्तर ॥
राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेश न सपनेहुँ ताके ॥
राम सिंधु घन सज्जन धीरा। चंदन तरु हरि संत समीरा ॥
राम कृपा नाशहिं सब रोगा। जौं यहि भाँति बनैं संजोगा ॥
राम चरन नूतन रति भई। माया जनित विपति सब गई ॥
राम कथा के ते अधिकारी। जिन्ह के सत संगति अति प्यारी ॥

दोहा—राम चरन रति जो चहै, अथवा पद निरवान ॥
भाव सहित सो यह कथा, करै श्रवन पुट पान ॥२०२॥

राम कथा गिरजा मैं बरनी। कलिमल शमन मनोमल हरनी ॥
राम उपासक जे जग माहीं। यहि सम प्रिय तिन के कछु नहीं ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं। संतन सुनिय राम गुन ग्रामहिं ॥

इति उत्तर काण्ड उत्तरार्द्ध समाप्त

चौपाई ४४ दोहा ८=५२